

॥ १४ ॥ १५ ॥ दृषःकर्णः पश्यतां अनादरेषष्ठी ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ सममन्यतसम्यगवधृतवान् ॥ २० ॥ दुर्मरुदुःखेनापि मर्तुमशक्यं चेच्छया ॥ २१ ॥ २२ ॥ तत्परण्डुष्करं मन्ये ॥ २३ ॥  
॥ २४ ॥ इतिकर्णपर्वणि नैलकंठीये भारतभाष्ये प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

ततः प्रवदते युद्धं तु मुलं लोमहर्षणं ॥ कुरूणां पाण्डवानां च परस्परजयैषिणां ॥ १४ ॥ तयोर्द्वौ दिवसौ युद्धं कुरूपाण्डवसेनयोः ॥ कर्णे सेनापतौ राजन्वभूवाद्भुतदर्श  
नं ॥ १५ ॥ ततः शत्रुक्षयं कृत्वा सुमहान्तरणे दृषः ॥ पश्यतां धार्तराष्ट्राणां फाल्गुनेन निपातितः ॥ १६ ॥ ततस्तु संजयः सर्वगत्वानागपुरं द्रुतं ॥ आचष्ट धृतराष्ट्राय य  
दृत्तं कुरूजांगले ॥ १७ ॥ जनमेजय उवाच आपगेयं हन्तं श्रुत्वा द्रोणं चापि महारथं ॥ आजगाम परामार्तिवद्दोराजां विकामुतः ॥ १८ ॥ स श्रुत्वा निहतं  
कर्णं दुर्योधनहितैषिणं ॥ कथं हि जवरप्राणानधारयत दुःखितः ॥ १९ ॥ यस्मिन् जयाशां पुत्राणां सममन्यत पार्थिवः ॥ तस्मिन् हतैः सकौरव्यः कथं प्राणानधार  
यत् ॥ २० ॥ दुर्मरुतदहं मन्ये नृणां कृच्छ्रे पिवत्ततां ॥ यत्र कर्णं हन्तं श्रुत्वा नात्यज जीवितं दृषः ॥ २१ ॥ तथा शांतं न वदं ब्रह्मन्वाह्नीकमेव च ॥ द्रोणं च सोमदत्तं च  
भूरिश्रवसमेव च ॥ २२ ॥ तथैव चान्यान्सुहृदः पुत्रानपौत्रांश्च पातितान् ॥ श्रुत्वा यन्नाजहात्याणां स्तन्मन्ये दुष्करं द्विज ॥ २३ ॥ एतन्मे सर्वमाचक्ष्व विस्तरणम  
हामुने ॥ न हितप्यामि पूर्वेषां शृण्वानश्चरितं महत् ॥ २४ ॥ इति श्रीमहाभारते कर्णपर्वणि जनमेजयवाक्यं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

कथमुक्त्वा पश्चाद्ब्रुवन् वक्तव्यमाददे ॥ ४ ॥ आस्ते तिष्ठति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥